अमर उजाला

शब्द सम्मान

2020

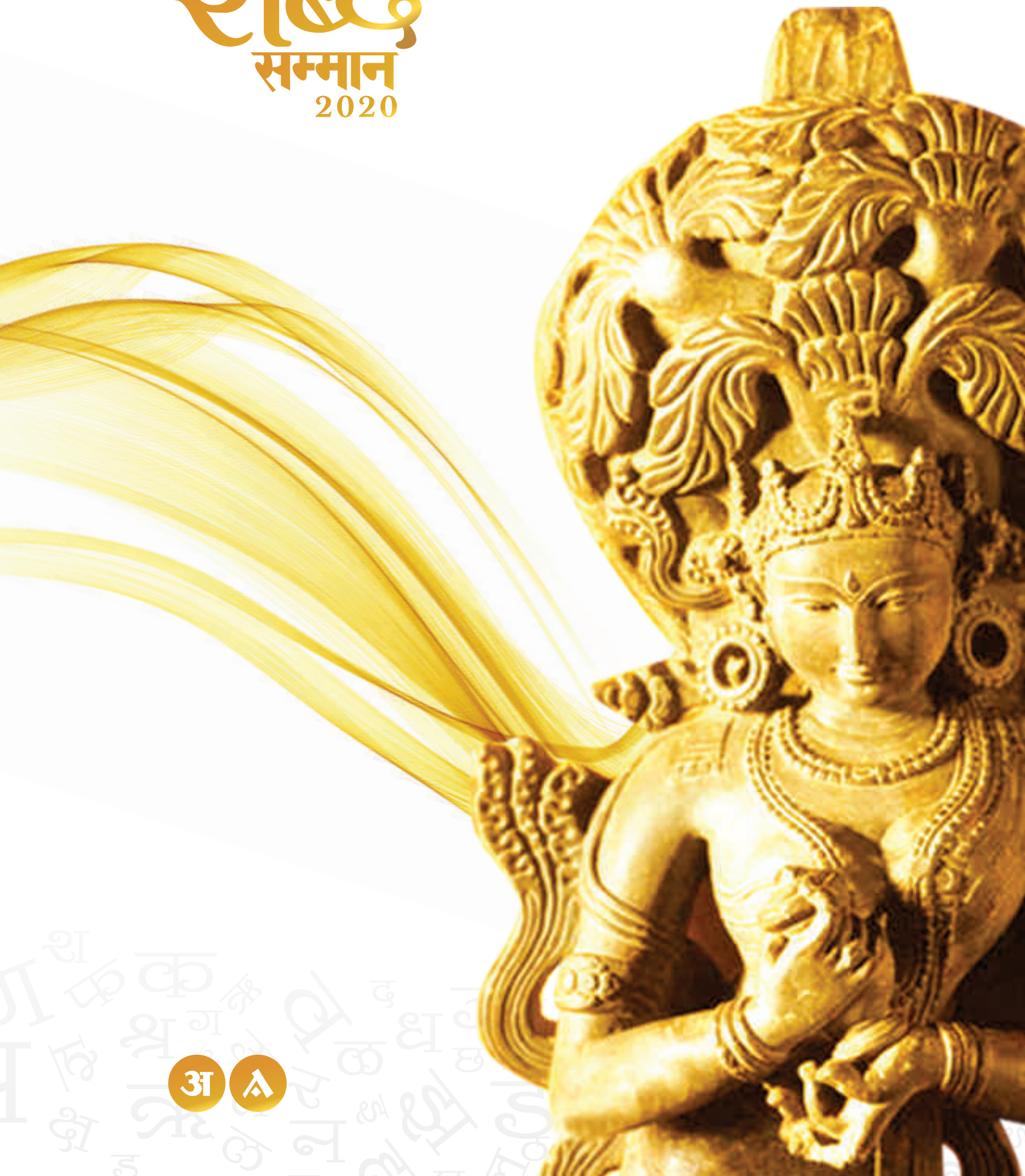

सर्वोच्च सम्मान

आकाशदीप

2018

हिंदी •

नामवर सिंह

प्रख्यात आलोचक
और प्राध्यापक

2018

कन्नड़ •

गिरीश कारनाड

नाटककार, फिल्म निर्देशक
और कलाकार

2019

हिंदी •

ज्ञानरंजन

प्रख्यात कथाकार
संपादक

2019

मराठी •

भालचंद्र नेमाडे

विख्यात कवि-उपन्यासकार

2018

पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने नई दिल्ली के तीनमूर्ति सभागार में
इन शब्दशिल्पियों को किया था सम्मानित

छाप कथा : मनीष वैद्य | **छाप कविता :** आर. चेतनक्रांति | **छाप कथेतर :** अनिल यादव
थाप पहली किताब : प्रवीण कुमार | **भाषाबंधु** श्रेष्ठ अनुवाद : गोरख थोरात

निर्णायक मंडल

प्रख्यात कथाकार **ज्ञानरंजन**, वरिष्ठ आलोचक **विश्वनाथ त्रिपाठी**, विख्यात कवि **मंगलेश डबराल**
प्रसिद्ध समीक्षक-कवि **प्रयाग शुक्ल**, सुप्रसिद्ध आलोचक **सुधीश पचौरी**

2019

शायर-गीतकार गुलजार ने मुंबई में आयोजित एक कार्यक्रम में
इन शब्दशिल्पियों को किया था सम्मानित

छाप उपन्यास : ज्ञान चतुर्वेदी | **छाप कविता :** गगन गिल | **छाप कथेतर :** सुनीता बुद्धिराजा
थाप पहली किताब : अंबर पाण्डेय | **भाषाबंधु** श्रेष्ठ अनुवाद : उत्पल बैनर्जी

निर्णायक मंडल

प्रख्यात कथाकार **अब्दुल बिस्मिल्लाह**, प्रख्यात कवि **अरुण कमल**, प्रख्यात कवयित्री **अनामिका**
वरिष्ठ आलोचक **नंदकिशोर आचार्य**, वरिष्ठ आलोचक **ज्योतिष जोशी**

अमर उजाला शब्द सम्मान 2020

हिये तराजू तौलि के...

शब्दों की महान परंपरा के सतत सम्मान और श्रेष्ठतम सृजन को रेखांकित करने के अनिवार्य दायित्व के निर्वहन की दिशा में अमर उजाला परिवार ने 'शब्द सम्मान' के रूप में छह अलंकरणों की स्थापना का निर्णय 2018 में लिया था। इसके तहत तय हुआ कि अमर उजाला फाउंडेशन की ओर से प्रतिवर्ष साहित्य में दो सर्वोच्च सम्मान–आकाशदीप, एक हिंदी और एक किसी अन्य भारतीय भाषा में सतत, विशिष्ट रचनात्मक योगदान के लिए पांच–पांच लाख रुपये की राशि के साथ अर्पित किए जाएंगे। इसके साथ ही, एक अलंकरण हिंदी में किसी भी लेखक की पहली कृति के लिए तय हुआ, तीन अलंकरण कथा, कविता तथा गैर–कथा श्रेणियों में वर्ष की श्रेष्ठ कृतियों को समर्पित किए गए तथा एक विशेष अलंकरण भारतीय भाषाओं में पुल बनाने वाली अनुवाद परंपरा के लिए स्थापित हुआ। इन सम्मानों में एक–एक लाख रुपये की राशि शामिल है।

2018 में शब्द सम्मान की गौरवपूर्ण शुरुआत हुई। सभी ने इस आयोजन को गहरी आत्मीयता दी। हमारा उत्साह बढ़ा और अब शब्द सम्मान का यह तीसरा साल है।

इस मौके पर उन तमाम शब्दशिल्पियों के प्रति हमारा कृतज्ञता भरा अभिवादन, जिन्होंने साहित्य को समृद्ध किया और अमर उजाला के इस आयोजन को सार्थकता दी है।

बधाई और नमन!

राजुल माहेश्वरी
प्रबंध निदेशक
अमर उजाला समूह

भाषा की शक्ति उसके साहित्य से न सिर्फ समृद्ध होती है, बल्कि उससे सामाजिक विवेक, सांस्कृतिक उज्ज्वलता और मानवीय मूल्यों का प्रकाश भी प्राप्त करती है।

हिंदी और समस्त भारतीय भाषाओं का साहित्य हमारे सामूहिक स्वप्न को प्रतिबिंबित करता है। भारतीय भाषाओं के सामूहिक स्वप्न के सम्मान में वर्ष 2018 में स्थापित अमर उजाला शब्द सम्मान का गौरवपूर्ण आरंभ समस्त भारतीय भाषाओं के मनीषियों और पाठक समाज के गहरे स्नेह का परिचायक बन गया। उस वर्ष हिंदी के डॉ. नामवर सिंह के साथ कन्नड़ के गिरीश कारनाड और 2019 में हिंदी के ज्ञानरंजन के साथ मराठी के भालचंद्र नेमाडे को समर्पित आकाशदीप ने अपनी उज्ज्वलता से सबको दीप्त कर दिया। इस वर्ष हिंदी के दुर्लभ गद्यकार विश्वनाथ त्रिपाठी और बांग्ला के अप्रतिम कवि शंख घोष को समर्पित किए जा रहे आकाशदीप ने इस दीप्ति को विलक्षण विस्तार दे दिया है। उदय प्रकाश, विष्णु नागर, ईशमधु तलवार वर्ष 2019 की विशिष्ट रचनाओं के साथ अलंकृत हो रहे हैं और पहली किताब के साथ ललित कुमार का प्रवेश हुआ है। भाषा बंधु के तहत भारतीय भाषाओं में अनुवाद की परंपरा में तेलुगु से प्रख्यात लेखक केशव रेड्डी की कृति के अनुवाद के लिए जे.एल. रेड्डी सम्मानित हो रहे हैं। सभी के प्रति आत्मीय अभिनंदन और अशेष शुभेच्छाएं। हर वर्ष निर्णायक मंडल बदलता है। इस वर्ष सर्वश्री मैनेजर पांडेय, ममता कालिया, ज्ञानेंद्रपति, महेश दर्पण और डॉ. देवशंकर नवीन इस उपक्रम में सहायक हुए। हम उनके प्रति कृतज्ञ हैं।

हिंदी के बहुप्रसारित दैनिक ने भारतीय भाषाओं को सांझी देहरी पर एक दीप जलाया है। जो इस उजाले के साक्षी, सहयोगी और साझीदार हैं, उन सबके प्रति कृतज्ञता भरा अभिवादन।

यशवंत व्यास
समूह सलाहकार, अमर उजाला

निर्णायक मंडल 2020

मैनेजर पांडेय
प्रख्यात आलोचक

ममता कालिया
मशहूर कथाकार

ज्ञानेन्द्रपति
मशहूर कवि

महेश दर्पण
प्रख्यात कथाकार

डॉ. देवशंकर नवीन
प्रख्यात आलोचक

सर्वोच्च सम्मान

आकाशदीप

बांग्ला

मेरी जितनी क्षमता है, उसके अनुरूप विनयपूर्वक काम करते जाना ही मेरा भवितव्य है...

अमर उजाला शब्द सम्मान 2020

जैसा मिला, उसी तरह रखना है जीवन

कोलकाता में रहा हमेशा। जिंदगी के कितने चेहरे। ट्रामों में, बसों में, दफ्तरों में, कतारों में। जैसा महसूस किया, लिखता रहा। बरसों पहले राजनीति में आने का न्योता मिला था, लेकिन मैं स्वतंत्र रहा। बरसों से लिखते रहने के बाद भी हर किताब के बाद भय होता रहा। पता नहीं, कितनी पसंद आएगी। लेकिन अपने जीवन को बदलने का प्रयास कभी नहीं किया। सोचता था, जैसा मिला, उसी तरह रखना है जीवन। जैसा देखा, उसी तरह लिखना है जीवन।

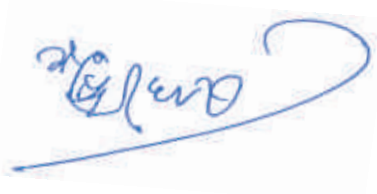

शंख घोष
प्रख्यात बांग्ला कवि

परिचय

- **जन्म**- 05 फरवरी, 1932, जिला चंदपुर (अब बांग्लादेश में)
- बांग्ला और भारतीय कविता के अग्रणी और अप्रतिम कवि। रवींद्र साहित्य के गंभीर और अद्वितीय प्रामाणिक अध्येता। कोलकाता विश्वविद्यालय, जादवपुर विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य। गद्य-पद्य मिलाकर सत्तर से ज्यादा पुस्तकें। बच्चों की सरस रचनाओं के लिए भी ख्यात। फिल्म निर्देशन में भी सक्रिय रहे।
- **पुरस्कार**- साहित्य अकादेमी पुरस्कार, कुमारन आसान पुरस्कार, सरस्वती सम्मान, आनंद पुरस्कार, शांतिनिकेतन के देशिकोत्तम तथा पद्मभूषण से अलंकृत। वर्ष 2016 का ज्ञानपीठ पुरस्कार।

सर्वोच्च सम्मान

आकाशदीप

हम संघर्ष के रास्ते कल्पित कर सकते हैं। सपने देख सकते हैं। एक रचनाकार का यही कर्तव्य है...

हिंदी

अमर उजाला शब्द सम्मान 2020

जैसे हम हैं वैसे ही रहें, वैसे ही जिएं !

मेरे लिए लेखन का कोई फार्मूला कभी नहीं रहा। अगर कोई फार्मूला बनाना चाहे तो यही होगा कि लेखक होकर मत लिखिए, जो देख रहे हैं, मनुष्य के रूप में जो महसूस कर रहे हैं, बस वह लिखिए। कई बार साधनहीनता आपका जीवन बदल देती है। गरीबी की जिंदगी में भी एक धुन होती है। ये धुन बड़ी रचनात्मक हो सकती है।

संगीत का, साहित्य का, सबका स्रोत जीवन में ही तो होता है। कौन-सी ऐसी शब्द की या ध्वनि की महिमा है जो आपको उस सौंदर्य की ओर उन्मुख कर देती है, जो साहित्य में प्रकट होती है? इस परख के बाद ही हम संघर्ष के रास्ते कल्पित कर सकते हैं। हम सपने देख सकते हैं। एक रचनाकार का यही कर्तव्य है।

विश्वनाथ त्रिपाठी
प्रख्यात साहित्यकार

परिचय

- **जन्म**- 16 फरवरी 1931, बिस्कोहर गांव, सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश
- हिंदी के वरिष्ठ आलोचक, कवि और दुर्लभ गद्यकार। अपने शब्दों में सामने खड़े प्रतीत होते हैं।
- पहली पुस्तक 'हिंदी आलोचना' आज भी अपनी मौलिकता, प्रांजलता, ईमानदार अभिव्यक्ति तथा सटीक एवं व्यापक विश्लेषण के कारण अपने क्षेत्र में अद्वितीय। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के जीवन-कर्म पर लिखी किताब 'व्योमकेश दरवेश' को अपार लोकप्रियता। एक और कृति 'नंगातलाई का गांव' बेहद प्रशंसित। तुलसीदास तथा मीरा के काव्य के सुपरिचित विद्वान। लंबे समय तक दिल्ली विशवविद्यालय में शिक्षक रहे।
- **पुरस्कार**- डॉ. रामविलास शर्मा सम्मान, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, साहित्य सम्मान, व्यास सम्मान, भाषा सम्मान, मूर्तिदेवी पुरस्कार और भारत भारती सम्मान।

श्रेष्ठ कृति सम्मान

छाप कविता

उदय प्रकाश | **अम्बर में अबाबील**

हमारी सामूहिक स्मृति में अपने पांव रोपता हुआ कवि

निर्णायक वक्तव्य

ज्ञानेन्द्रपति
मशहूर कवि

क विता-संग्रह 'सुनो कारीगर' (1980) से उदय प्रकाश के कवि-जीवन का आरंभ दृष्टिगत हुआ था। संवेदना में सींझी हुई वैचारिकता ने उनके कवि को एक अलग पहचान दी थी। लेकिन कथा-क्षेत्र में सिद्धि-प्रसिद्धि अर्जित करते हुए उनके लेखक का कवि-रूप गौण-सा होता गया, जबकि यह उनकी कवि-दृष्टि ही थी जो हिंदी कथा में उनके द्वारा संभव नवोन्मेष के मूल में थी। यह कवि-दृष्टि सामाजिक तलछट में जीते जन के तल पर पहुंचकर उसे आंकती थी। यह लोक-वेदना से पूरित और करुणा से संवलित सर्जक चित्त की देखती हुई आंख थी, विश्व-साहित्य के अवगाहन ने जिसके दृष्टि परास को विस्तार दिया। भारतीय लोक-मन में यथार्थ-बोध कल्पना की लीलाओं के साथ घुला-मिला रहता है और वही उदय प्रकाश के लेखक का ताना-बाना है। समीक्षकों-आलोचकों की जमात जो भी कहे, कहती रहे; उदय प्रकाश कवि-कर्म से कभी विरत नहीं हुए और उनकी अग्रयात्रा का नवीनतम पड़ाव है 'अम्बर में अबाबील'- उनका पांचवां कविता-संग्रह। यहां तक पहुंचते कवि के 'अंतःकरण का आयतन' विशाल से विशालतर हो उठा है और उसके स्वर में दमित-दलित वंचित-प्रवंचित जनों की वेदना ही नहीं, सत्ता-स्वीकृत पूंजीवादी प्रणाली के तथाकथित विकास के नाम पर मारी जा रही प्राकृतिक सत्ताओं- वे नदियां हों या जंगल, वनस्पतियां हों या पशु-पक्षी- सबका मौन आर्तनाद भर आया है। उसका अंतःकरण पृथ्वी के अपने घर से विस्थापित किए जा रहे तमाम आदिवासियों- वे मनुष्य हों या इतर प्राणी- का शरण्य है अब। तिब्बत से कश्मीर तक की व्यथा-कथा को अनूठी मार्मिकता के साथ दर्ज करने वाले इस कवि ने जिद्दी ढंग से अपनी स्मृति में और हमारी सामूहिक स्मृति में अपने पांव रोप रखे हैं। वैश्विक पूंजी की सर्वग्रासी लोलुपता और उसके आज्ञापालक सत्तातंत्र की नृशंसता के प्रतिरोध का साहस वहीं से तो उपजता है आखिर!

ज्ञानेन्द्रपति

विवेकपूर्ण स्वीकृति का एक प्रमाण

■ **उदय प्रकाश**

'अम्बर में अबाबील' को वर्ष 2020 के कविता संग्रहों में से अमर उजाला के निर्णायक मंडल द्वारा पुरस्कार के लिए चुने जाने से मुझे हार्दिक खुशी है और निर्णायक मंडल के प्रति मैं अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूं।

यह खुशी छोटी नहीं, बड़ी इसलिए है कि जो वर्ष 2020 अब हमेशा के लिए इतिहास में कोरोना जैसी अपूर्व महामारी के साल के रूप में दर्ज होगा, मृत्यु, आशंका, दिशाहीनता, हिंसा, पलायन और तमाम विपदाओं के बीच यदि 'अम्बर में अबाबील' की कविताएं जीवित रह आईं, तो यह सिर्फ वास्तविक जीवनानुभवों से ही जुड़ी हुईं, भाषा के हाशियों की कविता में पाई जाने वाली उद्दाम और बेखौफ जिजीविषा की संवेदनात्मक और विवेकपूर्ण स्वीकृति का एक प्रमाण है।

मुझे खुशी इसलिए भी और है कि साइबर स्पेस में पिछले कुछ दशकों से अपना शरण्य खोजतीं-भटकतीं कविताओं में से एक कविता ऐसी भी थी- 'फियर वायरस', जो निकट भविष्य में घटित होने वाली मौजूदा मानवीय सभ्यतामूलक विभीषिका को एक वर्ष पहले से ही किसी चेतावनी की तरह चुपचाप कागजों के बाहर व्यक्त कर रही थी।

आशंकाओं, दुर्घटनाओं, असमंजस और दिशाहीन नागरिक के भय और दुःस्वप्नों की वे कविताएं, जो कभी-कभार भविष्य का पूर्वाख्यान भी करती हैं, उन्हें चीह्नने और उन पर रोशनी डालने के लिए किसी सच्चे काव्य-विवेक और काव्यात्मक संवेदना की दरकार होती है।

'अमर उजाला' के ज्यूरी मंडल के प्रति मैं इस स्पष्ट 'पोएटिक जस्टिस' के लिए कृतज्ञता व्यक्त करता हूं।

- **जन्म-** 01 जनवरी, 1952 को मध्य प्रदेश के छोटे से गांव सीतापुर में। चर्चित कवि, कथाकार, पत्रकार और फिल्मकार। कई विश्वविद्यालयों में अध्यापन। कुछ कृतियों के अंग्रेजी, जर्मन, जापानी एवं अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में भी अनुवाद। 'उपरांत' और 'मोहन दास' के नाम से इनकी कहानियों पर फीचर फिल्में। मध्य प्रदेश संस्कृति विभाग में विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी रहे।
- **प्रमुख कृतियां-** सुनो कारीगर, कबूतर-कबूतर, रात में हारमोनियम, एक भाषा हुआ करती है तथा अम्बर में अबाबील (सभी कविता संग्रह), दरियाई घोडा, तिरिछ, दत्तात्रेय के दुःख, पीली छतरी वाली लड़की, मोहनदास, अरेबा-परेबा, पाल गोमरा का स्कूटर, वारेन हेस्टिंग्स का सांड, और अंत में प्रार्थना (सभी कहानी संग्रह) और ईश्वर की आंख, अपनी-उनकी बात तथा इक्कीसवीं सदी का पंचतंत्र (निबंध तथा आलोचना संग्रह)।
- **पुरस्कार-** भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, ओम प्रकाश सम्मान, श्रीकांत वर्मा पुरस्कार, मुक्तिबोध सम्मान, वनमाली सम्मान, पहल सम्मान, रूस का अंतरराष्ट्रीय पुश्किन सम्मान, कृष्णबलदेव वैद सम्मान और साहित्य अकादेमी पुरस्कार।
- **संपर्क-** udayprakash05@gmail.com

श्रेष्ठ कृति सम्मान

छाप कथेतर

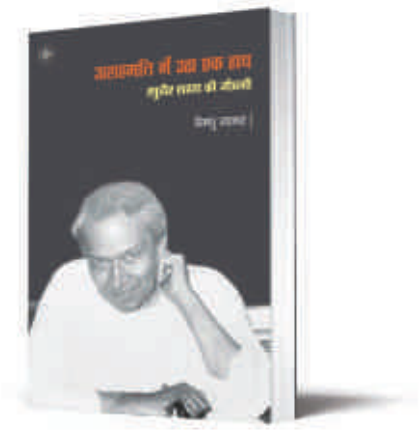

विष्णु नागर | **असहमति में उठा एक हाथ**

आत्मीयता और वस्तुपरकता का संगम

निर्णायक वक्तव्य

मैनेजर पांडेय
प्रख्यात आलोचक

कथेतर गद्य के लिए पुरस्कृत कृति 'असहमति में उठा एक हाथ' रघुवीर सहाय की जीवनी है। जिसके लेखक हैं—विष्णु नागर। एक अच्छी जीवनी के लिए यह जरूरी है कि आत्मीयता और वस्तुपरकता दोनों का संतुलन और सामंजस्य हो। विष्णु नागर द्वारा लिखित रघुवीर सहाय की इस जीवनी में ये दोनों गुण मौजूद हैं। रघुवीर सहाय की तरह ही विष्णु नागर भी कवि और पत्रकार दोनों हैं। ये दोनों बातें रघुवीर सहाय में भरपूर और विशिष्ट अवस्था में थीं। इसलिए विष्णु नागर और रघुवीर सहाय के बीच आत्मीयता स्वाभाविक है।

विष्णु नागर ने रघुवीर सहाय की जो जीवनी लिखी है, उसका शीर्षक ही रघुवीर सहाय की मानसिकता, सोच और विचारधारा को व्यक्त करने के लिए पर्याप्त है। विष्णु नागर ने बहुत खोजबीन के साथ रघुवीर सहाय के जीवन, उनके दोस्त, उनके लखनऊ, रघुवीर सहाय की ख्याति और उनके लेखन पर हरिवंशराय बच्चन के गहरे प्रभाव का आकलन इस जीवनी में किया है। रघुवीर सहाय ने 'आकाशवाणी' में काम किया और 'प्रतीक' नामक साहित्यिक पत्रिका में भी। रघुवीर जी लखनऊ के थे और उसे वे अपना वतन मानते थे। जीवन के अधिकांश दिन दिल्ली में बिताने के बावजूद दिल्ली को अपना परदेस मानते रहे। उन्होंने स्वतंत्र लेखन के साथ-साथ अज्ञेय द्वारा शुरू किए गए 'दिनमान' में काम करते हुए उसे अलग पहचान दी। वे अपने समय के प्रमुख समाजवादी नेताओं और विचारकों जैसे राम मनोहर लोहिया और जय प्रकाश नारायण के संपर्क में थे। रघुवीर जी यह मानते थे कि कविता दैवीय वस्तु नहीं, बल्कि बनाई हुई वस्तु है। वे यह मानते थे कि कविता केवल पढ़ने की चीज नहीं, बल्कि बोलने और सुनने की चीज भी है। उनमें संगीत की गहरी समझ थी। आपातकाल और हिंदू सांप्रदायिकता के समयों में रघुवीर सहाय ने साहस के साथ कठिन समय का सामना किया। ये सभी बातें विष्णु नागर द्वारा लिखित इस जीवनी में मौजूद हैं। विष्णु नागर ने इस जीवनी के अंत में रघुवीर सहाय के जीवन और रचना-संसार का ब्यौरा भी दिया है। इस कारण मुझे लगता है कि यह एक अच्छी जीवनी है और इसे कथेतर गद्य की रचना के रूप में पुरस्कृत किया जाना चाहिए।

मैनेजर पांडेय

सोच के दायरे और कुछ संकेत

यह मेरी पहली पुस्तक है, जिसे मैंने योजनाबद्ध रूप से एक शोधकर्ता के रूप में लिखा है। शोध का महत्व अकादमिक क्षेत्र में तो है ही, अच्छी पत्रकारिता में भी है। लेखन और पत्रकारिता का संयुक्त अनुभव संभवतः मेरे लिए इस काम में सहायक रहा हो। संयोगवश रघुवीर सहाय भी यही दो काम आजीवन अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में करते रहे। रघुवीर सहाय का जीवनभर का काम इतना बहुमुखी और इतना मौलिक है कि सब कुछ पर यहां लिखा भी नहीं जा सका लेकिन उनकी सोच के दायरे में आने वाली कुछ चीजों का संकेत और सार यहां है, जिन पर अभी तक दुर्भाग्य से हमारा ध्यान नहीं गया है। मेरे खयाल से उन बातों को भी जीवनी का अंग बनाना चाहिए, जो किसी लेखक के यहां अलग से दिखाई देती हैं और साहसिक ढंग से दिखाई देती हैं।

मेरे सबसे प्रिय कवियों में रघुवीर सहाय हैं और पत्रकारिता में भी उनका दर्जा उनके कवि रूप से मैं कम नहीं मानता। उन्होंने 'दिनमान' के माध्यम से जो पत्रकारिता की, उसका दूसरा उदाहरण कम से कम हिंदी पत्रकारिता में नहीं है। एक बड़े प्रकाशन संस्थान से इस तरह की जनपक्षधर और कल्पनाशील पत्रकारिता करना बहुत चुनौतीपूर्ण था। यह काम उन्होंने खतरे उठा कर किया।

रजा फाउंडेशन से उनकी जीवनी लिखने का प्रस्ताव सुखकर था। वैसे भी हिंदी में जीवनी साहित्य है कितना! मुझे खुशी होगी कि यूरोप आदि की तरह हम भी भविष्य में जीवनी साहित्य पर अधिक ध्यान दे सकें और हिंदी लेखकों की जीवनियों पर दुबारा काम हो।

कविता, कहानी, उपन्यास लेखन से भिन्न जीवनी लेखन एक तरह का सहयोगी काम है, भले उसे किसी एक ने संपन्न किया हो। अमर उजाला फाउंडेशन ज्यूरी के साथ उन सबका बहुत आभार, जिनके सहयोग के बगैर यह काम संभव न हो पाता। एक विशुद्ध लेखक- पत्रकार के लिए जीवनी लेखन चुनौतीपूर्ण काम है लेकिन यह काम समय-समय पर हमारे बड़े लेखकों ने भी किया। कृतियों और कृतिकारों का मूल्यांकन-पुनर्मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है। रघुवीर सहाय और शायद इस बहाने इस कृति का मूल्यांकन आगे होता रहेगा।

■ **विष्णु नागर**

- **जन्म-** 14 जून, 1950। बचपन और छात्र जीवन शाजापुर (मध्य प्रदेश) में बीता। 1972 से दिल्ली में स्वतंत्र पत्रकारिता। नवभारत टाइम्स, हिंदुस्तान, कादंबिनी, नई दुनिया तथा शुक्रवार से जुड़े रहे। भारतीय प्रेस परिषद के पूर्व सदस्य एवं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा की कार्यकारिणी के पूर्व सदस्य।
- **प्रमुख कृतियां-** मैं फिर कहता हूं चिड़िया, तालाब में डूबी छह लड़कियां, संसार बदल जाएगा, बच्चे, पिता और मां, कुछ चीजें कभी खोई नहीं, हंसने की तरह रोना, घर के बाहर घर, जीवन भी कविता हो सकता है (सभी कविता संग्रह) और आज का दिन, आदमी की मुश्किल, कुछ दूर, ईश्वर की कहानियां, आख्यान, बच्चा और गेंद, रात-दिन और पापा मैं गरीब बनूंगा (प्रमुख कहानी संग्रह)।
- **पुरस्कार-** अखिल भारतीय कथा पुरस्कार, शिखर सम्मान, (मध्य प्रदेश सरकार), साहित्य सम्मान (दिल्ली हिंदी अकादमी), शमशेर सम्मान, व्यंग्य श्री पुरस्कार, परंपरा ऋतुराज सम्मान, रामनाथ गोयनका पत्रकार शिरोमणि पुरस्कार, राही मासूम रजा सम्मान, जनकवि मुकुट बिहारी सरोज सम्मान।
- **संपर्क-** vishnunagar1950@gmail.com

श्रेष्ठ कृति सम्मान

छाप कहानी

ईशमधु तलवार | **लाल बजरी की सड़क**

फंतासी, फ्लैशबैक, स्मृति और कल्पना का रचनात्मक सफर

निर्णायक वक्तव्य

ममता कालिया
मशहूर कथाकार

ऐसे समय जब हिंदी कहानी में विवाद समाप्त हो गए हैं और विमर्श बूढ़े, ईशमधु तलवार के कहानी संग्रह 'लाल बजरी की सड़क' की कहानियां एक गहरी आश्वस्ति और आशा का संदेश देती है।

'लाल बजरी की सड़क' कहानी संग्रह में उन सब संवेदनाओं के रहते हम आश्वस्त रहते हैं कि हममें, किसी भी दिन, बेहतर इंसान बनने की क्षमता और संभावना दोनों मौजूद हैं। 'जीरो लाइन' कहानी में सुरक्षा बल के जवानों के माध्यम से उस संकट का चित्रण है जहां प्रेम और भाईचारे की उपस्थिति के बावजूद संदेह और अविश्वास मानवता का संकट बन जाता है। यहां भी राजनीतिक और भौगोलिक विभाजन की निस्सारता और निरर्थकता रेखांकित हुई है। यही सवाल 'दफन नदी' कहानी में सिर उठाते हैं। ये सवाल न भूतकाल के हैं न तत्काल के। ये हमारे समकाल में हमारे साथ चलते और हमें बेचैन रखते हैं। 'नीम अंधेरा', 'खड़खड़ाते पत्ते', 'रफ ड्राफ्ट' कहानियों में अद्भुत किस्सागोई तो है ही, साथ में समय के सवालों की उपस्थिति भी है। 'लयकारी' कहानी का संवाद 'फूल-पत्तों से ही पता चलता है कि मौसम बदल रहा है' वसंत ऋतु का आगाज करते-करते एक दर्दनाक प्रकरण तक पहुंचकर मन उदास कर देता है।

लेखक ने फंतासी, फ्लैशबैक, स्मृति और कल्पना का भरपूर रचनात्मक उपयोग किया है। उनकी कहानियों में सांप्रदायिक सौहार्द्र, मानवीय आस्था और तार्किक चिंतन साथ-साथ मौजूद है। प्रस्तुत संग्रह की प्रत्येक कहानी में भौगोलिक विभाजन की व्यर्थता, राजनीतिक मतभेद की मूढ़ता और आपसी आत्मीयता की अनिवार्यता दिखाई गई है। विश्वसनीयता इन रचनाओं का एक और सशक्त पहलू है। अमर उजाला शब्द सम्मान के लिए मैं इस रचनाकार की अनुशंसा करती हूं।

नदी और साहित्य दोनों में तैरते हुए

■ **ईशमधु तलवार**

मेरा कहानी संग्रह 'लाल बजरी की सड़क', जिस पर मुझे अमर उजाला का यह सम्मान मिला है, उसमें इसी शीर्षक से प्रकाशित कहानी कभी अपने समय की प्रतिष्ठित पत्रिका 'सारिका' में छपी थी।

साहित्य में मेरी प्रारंभ से ही दिलचस्पी रही, लेकिन आजीविका के लिए पत्रकारिता में आ गया। पत्रकारिता में दिन-रात की ऐसी नौकरी रही कि साहित्य के लिए अवसर कम ही मिलता। कभी जब मन में हूक उठती और जिंदगी के कुछ पात्र बेचैन करने लगते तो कुछ समय चुराकर कहानी लिख लेता। इस तरह पत्रकारिता से बंक मारकर ही ऐसे अवसर जुटाता रहा और जब-तब पत्रिकाओं में छपता रहा।

साहित्य में पत्रकारिता से मुझे बहुत मदद भी मिली। पत्रकारिता में अक्सर जिंदगी की कहानियों से मुठभेड़ होती। कहानियां लिखने का समय कम मिल पाता, लेकिन इतना कह सकता हूं कि मैंने ईमानदारी से साहित्य से उतना ही प्रेम किया, जितना पत्रकारिता से और मेरे लिए पत्रकारिता हमेशा उतना ही पवित्र कर्म रहा, जितना साहित्य।

साहित्य के अथाह सागर में कितना तैर पाता हूं, इस बारे में तो कुछ नहीं कह सकता, लेकिन तैरना आता है, यह अपने आप पर पूरा भरोसा है। सच पूछें तो नदी और साहित्य, दोनों में तैरना तो बचपन में गांव में ही शुरू कर दिया था। तैरते हुए अमर उजाला शब्द सम्मान तक चला आया, यह मेरे लिए कम बात नहीं है। अमर उजाला परिवार का मैं दिल से आभार व्यक्त करता हूं।

- **जन्म-** 20 मई, 1954 को राजस्थान में। नवभारत टाइम्स, राजस्थान पत्रिका, पंजाब केसरी आदि में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई। ईटीवी राजस्थान के संपादक।
- **प्रमुख कृतियां-** कहानी संग्रह 'लाल बजरी की सड़क', उपन्यास 'रिनाला खुर्द' चर्चित। बॉलीवुड के प्रसिद्ध संगीतकार दान सिंह के जीवन संघर्ष पर लिखी पुस्तक 'वो तेरे प्यार का गम' की भी चर्चा। एक व्यंग्य संग्रह 'इशारों-इशारों में' भी प्रकाशित। दो नाटकों- 'लयकारी' और 'फेल का फंडा' के अनेक मंचन। फिल्म 'कसाई' और कई नाटकों के लिए गीत।
- **पुरस्कार-** राजस्थान साहित्य अकादमी की ओर से साहित्यिक एवं रचनात्मक पत्रकारिता के लिए 2013 में पुरस्कृत हो चुके हैं। राजस्थान सरकार के भाषा एवं पुस्तकालय विभाग की ओर से 2019 में हिंदी सेवा पुरस्कार से सम्मानित।
- **संपर्क-** ishmadhu14@gmail.com

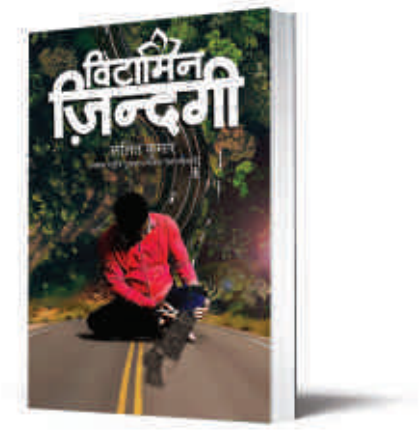

श्रेष्ठ कृति सम्मान

थाप

पहली किताब

ललित कुमार | **विटामिन जिन्दगी**

जीने की कला सीखते हुए मंजिल की ओर

निर्णायक वक्तव्य

एक असामान्य की यह असाधारण और पठनीय जीवन-यात्रा अपनी सहज और आकर्षक भाषा में एक नवीन विटामिन सृजित कर गई है- 'विटामिन जिन्दगी'। इस वृत्त में यह क्रमशः आकार लेता दीखता है कथा नायक के मन की शक्ति से, जिसे बल मिलता है उसके आत्मविश्वास, दृढ़ इच्छाशक्ति और कभी हार न मानने वाली सतत निर्भीकता से। लेखक की विशेषता यह है कि वह विकट जीवन-स्थितियों की अपनी इस संघर्ष-यात्रा में बेचारेपन से अलग हो, सहज परिश्रम के मार्ग पर चलते हुए मंजिल तक पहुंचना चाहता है। अच्छी बात यह है कि इस दीर्घ और कठिन प्रक्रिया में, सहयोगी रहे छोटे से छोटे तत्वों को भी वह स्मृति से ओझल नहीं होने देता। यहां सहचर बैसाखियां उसकी शक्ति हैं, जो भरसक इस चेष्टा में रहती हैं कि उनके नायक की सहनशक्ति बनी रहे, ताकि वह व्हीलचेयर के प्रयोग से यथा संभव बचा रहे और जन-जन में यह विश्वास जगा सके कि असमर्थ का संघर्ष और जज्बा ही उसे समर्थ बना सकता है। छोटी-छोटी उपलब्धियों पर मोहित न हो जाने वाले इस महत्वाकांक्षी और सार्थक जीवन-वृत्त में पाठकों के लिए प्रेरणा बनने की शक्ति तो है ही, इससे वे जीने की कला सीखते हुए असामान्यों के प्रति अपने बरताव में परिवर्तन भी कर सकेंगे।

महेश दर्पण
प्रख्यात कथाकार

मुझे तो पूरी दुनिया देखने की चाहत है

अमर उजाला फांउडेशन और निर्णायक मंडल का आभार कि उन्होंने मेरी कृति को शब्द सम्मान के लिए चुना। सच तो यह है कि 'विटामिन जिन्दगी' को मैंने एक व्यक्तिगत दस्तावेज के रूप में लिखना शुरू किया था। जीवन के उतार-चढ़ावों से गुजरना मेरे लिए बहुत ही कठिन रहा है- ऐसे में मुझे लगा कि मुझे अपने जीवन को खुद के लिए, अपने परिवारजनों और मित्रों के लिए कलमबद्ध तो करना ही चाहिए। लिखने के दौरान जब इन संस्मरणों को कुछ मित्रों को दिखाया तो उन्होंने कहा कि मुझे इन्हें प्रकाशित करना चाहिए। उनका कहना था कि यह संस्मरण सभी को पढ़ना चाहिए। फिर भी यह पुस्तक प्रकाशक को देने में मुझे कई वर्ष लग गए, क्योंकि मैं बार-बार खुद से यही प्रश्न करता रहा कि आखिर कोई मेरे संस्मरण को क्यों पढ़ना चाहेगा? आखिर एक दिन दे ही दिया।

पोलियो के साथ अभी तक बीते जीवन की कुछ यादें इस पुस्तक में लिख दी हैं, जीवन भर चलने वाले इस संघर्ष में फिर भी बहुत कुछ ऐसा बाकी है जिसे लिखने के लिए शब्द नहीं मिले... सो नहीं लिखा। मैंने अभी तक व्हीलचेयर प्रयोग करना शुरू नहीं किया है। मैं तब तक बैसाखियों से चलूंगा जब तक मेरी सहनशक्ति की सीमा नहीं आ जाती। इन बैसाखियों से मेरा पुराना नाता है, इन बैसाखियों ने मेरा बहुत साथ दिया है। ये बैसाखियां मुझे भारत के अनेक राज्यों के अलावा चीन, थाईलैंड, स्पेन, जर्मनी, यूके, मॉरीशस, कनाडा इत्यादि तक लेकर गई हैं... लेकिन अभी मुझे तो पूरी दुनिया देखने की चाहत है।

यह सुनने में अजीब लगता है, लेकिन दुख और असफलता जीवन के इंजन के लिए बेहतरीन ईंधन का काम करते हैं। हमारे देखे कई स्वप्न पूरे नहीं हो पाते। इन असफलताओं से मन टूटता भी है, लेकिन पीड़ा और असफलता हमें बेहतर जीवन जीने की ऊर्जा भी देते हैं, यह हम पर है कि हम इस ऊर्जा का जीवन में कैसा इस्तेमाल करते हैं। दुख में जीना और दुख के साथ जीना, इन दोनों बातों में बहुत फर्क है।

अभी दुनिया में बहुत कुछ देखने, समझने और करने के लिए बाकी है। संघर्ष जारी है। संघर्ष के इस पथ पर ऐसे पुरस्कार मन को ताकत तो देते ही हैं।

■ **ललित कुमार**

- **जन्म-** 16 अगस्त, 1976, दिल्ली के एक गांव में एक निम्न-मध्यम वर्गीय परिवार में।
- चार वर्ष की आयु में पोलियो का आघात। स्कूल की पढ़ाई में संघर्ष बढ़ गया। छह ऑपरेशन हुए और दो साल से अधिक समय बिस्तर पर रहना पड़ा। इन सबके बावजूद अपनी शिक्षा पूरी की और अपने परिवार के इतिहास में पहले ग्रेजुएट। लेखन में दिलचस्पी आरंभ से ही।
- संयुक्त राष्ट्र संघ और मेडिकल रिसर्च काउंसिल जैसे अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ काम। एक जाने-माने तकनीक ब्लॉगर। इंटरनेट पर कविता कोश एवं गद्य कोश परियोजनाओं के संस्थापक निदेशक। ईवारा फाउंडेशन नामक गैर-सरकारी संस्था के संस्थापक-अध्यक्ष। विकलांगता के क्षेत्र में काम करने के लिए ख्यात, यूट्यूब चैनल दशमलव पर 1,50,000 से अधिक दर्शक।
- **संपर्क-** india.lalit@gmail.com

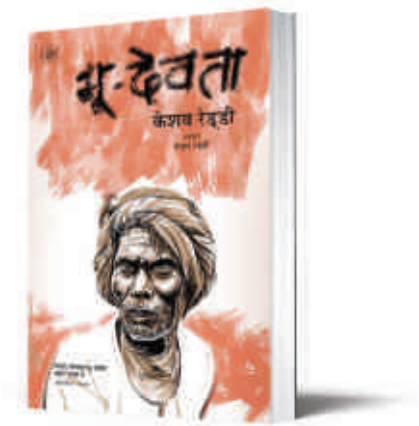

भाषाबंधु
श्रेष्ठ अनुवाद

जे.एल. रेड्डी | **भू-देवता**

तेलुगु मूलकृति : केशव रेड्डी

मूल पाठ की आत्मा एवं परिवेश को बचाते हुए बात

हर विशिष्ट अनुवाद का 'हेतु' अपने समय के सामाजिक जीवन के महत मूल्य एवं संघर्ष को रेखांकित करना होता है। अनूदित पाठ में पुनर्जीवन पाकर ही किसी रचना का मूल्य-विस्तार होता है, उसकी शाश्वत और सार्वत्रिक उपादेयता सिद्ध होती है। अपने इसी वैशिष्ट्य के कारण अनुवाद के रास्ते दुनिया की कई विलुप्त होती सभ्यता और संस्कृति का मूल्य बचा रहे हैं। यह अनुवाद की नीति भी है और नियति भी। इस दृष्टि से श्रेष्ठ अनुवादक जे.एल. रेड्डी द्वारा तेलुगु के प्रसिद्ध उपन्यासकार केशव रेड्डी की कृति 'भू-देवता' के मर्म की सही पहचान कर सही समय में हिंदी अनुवाद करना उनके अनुरक्त राष्ट्रबोध का द्योतक है। इस वरेण्य अनुवाद-कार्य में बीसवीं सदी के मध्यवर्ती समय के किसान-जीवन की दुर्दशा अंकित हुई है, जब आजाद भारत के नायक शासन-व्यवस्था के सूत्र रचने में तल्लीन थे, भूमिपुत्र किसान अपने मटियामेट सपनों की दशा से आहत थे; व्यवस्था के देवताओं को इनकी कोई सुधि नहीं थी। वे भूल गए थे कि अन्न के उत्पादक किसान ही दुनिया के वरेण्य नागरिक हैं, जिनके श्रमफल से मनुष्य की जिजीविषा पूरी होती है। यह कृति किसान के प्रयत्नों की उसी उपेक्षा, विफलता, हताशा, मतिभ्रम, विक्षिप्ति और अंततः मृत्यु की गाथा है। मूल पाठ के भाव को सुरक्षित रखते हुए अनूदित पाठ की भाषा का संस्कार और संस्कृति सुरक्षित रख पाना वस्तुतः दुष्कर होता है। इस परकाया प्रवेश में अनुवादक को भरपूर सफलता मिली है। भाव, भाषा, रूपक, मुहावरा, युक्ति, प्रयुक्ति... हर दृष्टि से इसे एक श्रेष्ठ कृति का श्रेष्ठ अनुवाद मानना मुनासिब है। मूल पाठ की आत्मा एवं परिवेश को अक्षुण्ण रखते हुए अनूदित पाठ में भाषा की निजता और सांस्कृतिक छवियों का समावेश एक सुदक्ष अनुवाद-कौशल की मांग करता है, जिसमें जे.एल. रेड्डी शतशः सफल हुए हैं।

निर्णायक
वक्तव्य

डॉ. देवशंकर नवीन
प्रख्यात आलोचक

मार्मिकता का अनुवाद करते हुए

अमर उजाला शब्द सम्मान के लिए दिल से आभार। मेरे द्वारा अनूदित केशव रेड्डी के उपन्यास 'भू-देवता' एक किसान की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान की गाथा है। उस किसान के प्रयत्न से लेकर उसकी विफलता तक की, असुरक्षा से उन्माद तक की और उन्माद से मृत्यु तक की यात्रा का यहां अंकन है। इस संबंध में केशव रेड्डी ने कहा है, ''भूमि को खोने की व्यथा में विक्षिप्त होकर प्राणत्याग करने वाले एक किसान की जैसी बातें 'भू-देवता' में वर्णित हुई हैं, उसी तरह की बातें हमारे परिवार में भी घटित हुई हैं। हमारे पास कुछ जमीन थी। कुछ पारिवारिक कारणों से उसमें से कुछ जमीन बेचनी पड़ी। सारी जमीन भी नहीं। मेरे पिताजी को वह सहन नहीं हुआ। जमीन बिक गई है, यह जानकर भी वे 'जमीन...जमीन' की रट लगाते हुए उस जमीन के चारों ओर घूमा करते थे। धीरे-धीरे वे विक्षिप्त-से हो गए, उसके एक वर्ष के अंदर उनकी मृत्यु ही हो गई। इस घटना ने मुझ पर एक अमिट छाप छोड़ी है।''

उपन्यास का कथाकाल 1950 है। स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद जिस समय भारत नए सिरे से अपना स्वरूप गढ़ रहा था, उस समय की ये घटनाएं हैं। लगभग 70 वर्ष पहले जिस प्रांत में रोज ही अकाल तांडव करता रहता था, उस प्रांत की दुःस्थिति का चित्रण केशव रेड्डी ने किया है। निस्संदेह किसानी जीवन की एक मार्मिक दास्तान है यह उपन्यास 'भू-देवता'।

'भू-देवता' के आत्मकथात्मक होने के कारण भी इसमें मार्मिकता आई है। इसलिए इस तरह के कथ्य के अनुवाद की भी सीमाएं हैं। मार्मिकता का अनुवाद संभव नहीं, क्योंकि स्रोतभाषा से लक्ष्यभाषा में रचना की समतुल्य अभिव्यक्ति एक कष्टसाध्य कर्म है। इस कष्टसाध्यता के कारण ही कुछ विद्वानों ने अनुवाद को निष्फल प्रयास कहा है, तो कुछ दूसरे विद्वानों ने अनिवार्य पाप कहा है। अनुवाद को एक निष्फल प्रयास या पाप न भी मानें, तब भी वह पूर्णतः संतोष देने वाला काम तो नहीं है। यह खतरा तब और बढ़ जाता है जब लक्ष्यभाषा अनुवादक की अपनी भाषा न हो। मैंने खतरा लिया। सुखद यह है कि लोगों ने पसंद किया। एक बार फिर से पुरस्कार के लिए अमर उजाला परिवार का आभार।

■ **जे.एल. रेड्डी**

- **जन्म-** 01 जुलाई, 1940 को कडपा जिला (आंध्र प्रदेश) के जम्मलमडुगु में। हिंदी, तेलुगु, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में दक्षता। विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्यापन का लंबा अनुभव। दिल्ली विश्वविद्यालय में अब तक के एकमात्र तेलुगु भाषी हिंदी प्राध्यापक रहे। तेलुगु से हिंदी अनुवाद के लिए चर्चित।
- **प्रमुख कृतियां-** बलिवाडा कांता राव की प्रतिनिधि कहानियों का अनुवाद 'ऋषीकेश का पत्थर', डॉ. वासिरेड्डी सीतादेवी के उपन्यास 'मट्टि मनिषि' का अनुवाद 'मिट्टी का आदमी', डॉ. केशव रेड्डी के उपन्यास 'अतडु अडविनि जयिंचाडु' का हिंदी अनुवाद 'उसने जंगल को जीता', महेंद्र (मधुरांतकम) के उपन्यास 'स्वर्ण सीमकु स्वागतम' का हिंदी अनुवाद 'स्वर्णक्षेत्र में स्वागत है', ए. विद्यासागर की पुस्तक 'भद्राचलम मन्नेम कतलु' का हिंदी अनुवाद 'मछली पिये न सूखे ताल' और तेलुगु के गौरव ग्रंथों पर आधारित डॉ. अनंत पद्मनाभ राव की पुस्तक का अनुवाद 'तेलुगु के गौरव ग्रंथ' समेत ढेर सारे अनुवाद।
- **पुरस्कार-** साहित्य अकादेमी का अनुवाद पुरस्कार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा हिंदीतर भाषी हिंदी लेखक पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का सौहार्द पुरस्कार, गीता देवी गोयनका हिंदी-तेलुगु अनुवाद पुरस्कार समेत कई सम्मान।
- **संपर्क-** jlreddy93@yahoo.com

अमर उजाला

18 अप्रैल, 1948 को प्रकाशित अमर उजाला की पहली प्रति

अमर उजाला देश के अग्रणी दैनिक समाचार पत्रों में से है। आजादी पाने के अगले साल 18 अप्रैल, 1948 को उत्तर प्रदेश के शहर आगरा से पहली बार प्रकाशित हुआ। वर्तमान में पूरे उत्तर भारत में लोकप्रिय अमर उजाला के संस्थापक डोरीलाल अग्रवाल तथा मुरारीलाल माहेश्वरी थे। अमर उजाला के सात राज्यों और एक संघ राज्य क्षेत्र में कुल 21 संस्करण हैं। इस समाचार पत्र का विस्तार 179 जिलों में है। इंडियन रीडरशिप सर्वे के मुताबिक अमर उजाला देश के सर्वाधिक प्रसारित चार अखबारों में से एक है।

अमर उजाला शब्द सम्मान 2020

अलंकरण प्रतीक चिह्न

अनुकृति : गंगा

सेन वंश, 12वीं शताब्दी

राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली में संग्रहीत

अमर उजाला फाउंडेशन

सी 21-22, सेक्टर-59, नोएडा-201301

shabdsamman.amarujala.com

shabdsamman@amarujala.com

facebook.com/AUShabdSamman shabdsamman https://www.instagram.com/shabdsamman/